

ting the exports. There is not any statutory thing as such.

SHRI S. K. TAPURIAH : What does this export quota mean? It means that more people are keen to export than the importing countries want to import. If quotas are given, more is not exported and it is limited. When you are aware that more can be exported, you fix quotas. After that your exports go down. What does this indicate? Does it not indicate that something is wrong in it?

SHRI B. R. BHAGAT : Quota is not for bringing down the exports. With this Deposit scheme we gave other facilities for the exporters so that they are able to overcome this difficulty of 50% deposit imposed and it is to regulate this and not to bring down the export quotas.

SHRI MANUBHAI PATEL : We were very much agitated in pre-Independence days that foreign cloth worth Rs. 52 crores was imported. Now we are importing cotton worth Rs. 95.8 crores. I would like to know whether the Government is considering to divert this huge amount to give incentives and encouragement to the cotton growers by giving them more support prices so that they grow more and this import is stopped.

SHRI B. R. BHAGAT : I accept that this is the weakest element in our scheme that we have not been able to increase the quantum as well as the quality of the long staple cotton and much more needs to be done both by way of research or investments or inputs or encouragement to the farmers.

चाय सम्बन्धी भारत-लंका करार

†

*1265. श्री राम स्वरूप बिद्यार्थी :

कुमारी कमला कुमारी :

श्री ओम प्रकाश त्यागी :

श्री बलराज मधोक :

क्या बंबेईशक व्यापार तथा पूर्ति मंत्री
17 दिसम्बर, 1968 के अतारोक्त प्रश्न संख्या

4798 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारत और लंका के बीच चाय के सम्बन्ध में हुए करार के बारे में दोनों देशों के कार्यकारी दलों की संयुक्त बैठक हुई है ;

(ख) यदि हां तो इस बैठक में क्या निर्णय किये गये ; और

(ग) यदि नहीं तो यह बैठक कब आयोजित करने का प्रस्ताव है ?

THE MINISTER OF FOREIGN TRADE AND SUPPLY (SHRI B. R. BHAGAT) : (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

(c) As soon as the reports submitted by the Working Groups of India and Ceylon have been considered by their respective Governments.

श्री राम स्वरूप बिद्यार्थी : अध्यक्ष महोदय, मूल प्रश्न जिसका भाग (ए) इन प्रकार था :

Whether the Joint meeting of the Working Groups of both the Countries regarding the agreement reached between India and Ceylon on tea has been held.

उसका जवाब मंत्री महोदय ने दिया—नो, सर। मैं जानाना चाहता हूँ कि इस एग्रीमेन्ट की तहत जिस स्टैंडिंग कमेटी की सिफारिश की गई थी, क्या उसका आपने निर्माण कर लिया है? यदि नहीं किया है तो उसके मार्ग में क्या बाधाएँ हैं? और हमारी तरफ हे स्टैंडिंग कमेटी में कौन कौन व्यक्ति शामिल हैं।

श्री ब० रा० भगत : स्टैंडिंग कमेटी वर्किंग ग्रुप की अलग है। इसीलिए मैं ने कहा कि वर्किंग ग्रुप की रिपोर्ट आ गई है, दोनों सरकारों की, और वह विचाराधीन

है। अभी उनकी मीटिंग नहीं हुई है। स्टैंडिंग कमेटी ज्वाइन्ट बात है, उसकी अभी हाल में, दो चार दिन हुए एक मीटिंग हुई थी। हमारे यहाँ से, जो हमारे फारेन ट्रेड मिनिस्ट्री के एडीशनल सेक्रेटरी हैं, वे गए थे। ... (व्यवधान) ... उनके नाम तो मेरे पास नहीं हैं लेकिन वही उस डेलिगेशन के लीडर थे।

श्री राम स्वरूप विद्यार्थी : अध्यक्ष महोदय, एग््रीमेन्ट को काफी समय हो गया। हमारी सरकार की तरफसे उसको इम्प्लीमेंट करने का जितना प्रयास होना चाहिए था उतना प्रयास करने की चेष्टा नहीं की गई। हो सकता है कि इनके सामने कुछ कठिनाइयाँ भी हों लेकिन जो आपिशल मशीनरी है वह यह नहीं चाहती थी कि इस डंग का आपस में सीलोन और इंडिया का कोम्पारेसन हो जाये जिससे कि चाय के निर्यात में इस देश को सुविधा हो सके और फौरेन एक्सचेंज की प्राप्ति हो। इसीलिए मैं पूछना चाहता हूँ कि आप के दफ्तर की तरफ से क्या कई दफा ऐसी बाधाएँ नहीं डाली गईं इत्त मामले में ताकि इम्प्लीमेंटेशन न हो सके और क्या इस सम्बन्ध में ट्रेड की तरफ से उनके खिलाफ रिप्रेजेन्टेशन आया था? यदि हाँ, तो उसपर आपने क्या निर्णय लिया?

श्री ब० रा० भगत : जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध है कि हिन्दुस्तान और श्रीलंका के बीच में बातचीत करके ज्वाइन्ट एक्शन करें ताकि हमारा बाहर जो निर्यात हो उसकी यूनिट वैल्यू बड़े और दूसरी सुविधायें प्राप्त हो सकें यह बात सिर्फ हमारे मातहत ही नहीं है बल्कि उनसे बात चीत करके दोनों का ही एग््रीमेन्ट होगा चाहे कोई कन्सोर्टियम हो—तभी चीज आगे बढ़ेगी। चूँकि हम स्वयं एक बड़े एक्सपोर्टर हैं इसलिए हमको भी चिन्ता है, हम स्वयं चाहते हैं कि चाय का एक्सपोर्ट बड़े, यूनिट वैल्यू बड़े और इसके लिए हम कोशिश में लगे हैं

कि इन चीजों को दूर करें। साथ ही साथ, पैकेजिंग, टी ब्लेंडिंग, मार्केटिंग इसको हम आगे बढ़ाना चाहते हैं। इसमें हम लगे हैं।

श्री राम स्वरूप विद्यार्थी : मैंने पूछा था कि कोई शिकायत आई थी, उस का कोई जवाब मन्त्री महोदय ने नहीं दिया।

श्री ब० रा० भगत : इसमें शिकायत का कोई सवाल नहीं है। सुभाव आते रहते हैं। टी बोर्ड बना है, प्लान्टर्स हैं और दूसरे लोग हैं—वे इन पर विचार करके सुभाव देते हैं। ये चीजें हमेशा चलती रहती हैं।

SHRI HEM BARUA : Since both the countries, Ceylon and India are interested in selling their tea in the world market in the most favourable terms and since the competition to Indian tea is less from Ceylon and more from the East African countries, may I know what steps the Government have taken to coordinate the efforts of the two countries Ceylon and India to counteract that competition coming from East African countries?

SHRI B. R. BHAGAT : The precise reason is, the two countries are getting together and standing committees of the two countries have been set up to go into all these questions and certain aspects of the problem have been gone into and working papers have been produced and it is at the stage of consideration and final agreement between the two countries.

SHRI HEM BARUA : Standing agreement between the two countries is intended only for reducing competition between the two countries. My question was specific. There is competition coming from East African countries. What steps the Government have taken to see that that competition coming from East African countries to India are eliminated, that is what I wanted to know.

SHRI B. R. BHAGAT : Standing Committee is not to reduce competition between the two countries. They are two main sellers of tea. They are interested in all aspects of exports.

श्री सीता राम केसरी : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा वैदेशिक व्यापार एवं पूति मंत्री से जानना चाहूंगा कि चाय के निर्यात में हमारी प्रतियोगिता ईस्ट अफ्रीका से चलती है उसको भीट करने के लिये—जैसी कि अखबारों से मुझे खबर है—आपने सीलोन के साथ एक ज्वाइंट वेंचर का फैसला लिया है और एक कंपनी भी बनाई है भारत और सीलोन की ? मैं जानना चाहता हूँ कि क्या इस तरह की कोई ज्वाइंट कंपनी या कन्सोर्टियम का निर्माण हुआ है या नहीं जिसके द्वारा ईस्ट अफ्रीका के साथ निर्यात की प्रतियोगिता में उचित ढंग से मुकाबला किया जा सके ?

श्री ब० रा० भगत : मैं एक बात साफ कर देना चाहता हूँ कि न तो भारत की और न सीलोन की यह इच्छा है कि ईस्ट अफ्रीका से प्रतियोगिता के लिए कोई कन्सोर्टियम बनाया जाये। कम्पाला में जो मीटिंग हुई, जितने प्रोड्यूसिंग कन्ट्रीज हैं, हिन्दुस्तान है, सीलोन है और ईस्ट अफ्रीका के कई कन्ट्रीज हैं, सब मिल कर इस बात को सोच रहे हैं कि सारी दुनिया में जो बिक्री होती है उसके लिए क्या किया जाय-हम सेलर्स हैं चाय बेचने वाले हैं, अगर यूनिट वॉल्यू गिरती है या कोई और दिक्कतें हैं तो हम कौन सी सुविधायें प्राप्त करें। जहाँ तक ईस्ट अफ्रीका की बात है, उनका प्रोडक्शन अभी इतना ज्यादा नहीं बढ़ा है। उनके विरोध में कोई चीज हो, ऐसी बात नहीं है। इस बात को मैं विल्कुल साफ कर देना चाहता हूँ।

श्री सीताराम केसरी : मैंने यह भी पूछा था कि क्या आपने भारत और सीलोन की कोई ज्वाइंट कंपनी बनाई है।

श्री ब० रा० भगत : कन्सोर्टियम बनाने के लिए जो बकिंग ग्रुप बना उसकी रिपोर्ट दोनों देशों को आई है। उस रिपोर्ट पर विचार करके कोई एग्रीमेन्ट होगा—कोई रास्ता निकलेगा तभी बनेगा।

SHRI D. N. PATODIA : The idea of some joint effort for the purpose of promotion of export of tea between India and Ceylon was for the first time mooted when the Indian Prime Minister visited Ceylon in September, 1967. Thereafter when the Commerce Minister visited in June, 1968, the Committee was formed. That Committee was subsequently subdivided into small study groups and they had been meeting from time to time. But in spite of all these efforts, in spite of 1½ years having passed away no concrete results have come out with regard to any joint effort for the purpose of promoting tea exports. There is evidence and clear indication that the Ceylonese Government are not at all serious about it. After the recent Kampala conference which the Commerce Minister of Ceylon attended, the Ceylonese Government has given clear indication that the formation of the Joint consortium is not likely to materialise in the matter of India-Ceylon agreement. My question is whether it is true that the Ceylonese Government does not attach that much seriousness to the problem as India wants them to, and whether it is true that the idea of formation of consortium is gradually dying its natural death ?

SHRI B. R. BHAGAT : In a matter where two sovereign Governments are concerned, we cannot set the pace. I can only assure the House that so far as this country is concerned, we are quite serious about it. Although reference was made to the statement of the Commerce Minister of Ceylon, I can only say that whether the consortium comes or not, we are going ahead. If it comes we will cooperate with Ceylon ; if it does not, we will take certain steps so that the interests of our exports are safeguarded.

SHRI D. N. PATODIA My question was very clear as to whether the Government of Indian is aware of the fact that Ceylonese Government is not serious

about it and whether it is true the statement given by the Commerce Minister indicates that the possibility of forming a consortium is remote ?

SHRI B. R. BHAGAT : I am saying that the working paper is there and unless they back out, things will move on... (Interruptions).

MR S PEAKER : I am calling Shri Suraj Bhan.

रूस और रूमानिया को निर्यात

- *1266. श्री सुरज भान :
 श्री रणजीत सिंह :
 श्री अटल बिहारी वाजपेयी :
 श्री राम गोपाल शालबाले :
 श्री जगन्नाथ राव जोशी :
 श्री बृज भूषण लाल :

क्या बंबेशिक व्यापार तथा पूर्ति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि हाल के वर्षों में रूस और रूमानिया को किये जाने वाले भारत के माल के निर्यात में कमी हुई है ; और

(ख) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है और इस दिशा में क्या कार्यवाही की गई है ?

बंबेशिक व्यापार तथा पूर्ति मंत्री (श्री ब० रा० भगत) : (क) जी नहीं ।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

श्री सुरज भान : अध्यक्ष महोदय, मुझे मंत्री जी का जवाब सुन कर हैरानी हुई । अभी कुछ दिन पहले मैंने अखबार में पढ़ा था कि भारत के रुपये की कीमत घटने के बाद रशिया और इंडिया के जो तिजारती ताल्लुकात हैं उसके कारण 300 करोड़ ६० सालाना की तिजारत है । इतने बड़े देशों के

बीच में यह अच्छी बात नहीं है । मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि अभी कुछ दिन पहले आपने रशिया के साथ वेंगन डील किया था उसकी क्या पोजीशन है ? कब तक आप वेंगन देंगे, कीमत का भगड़ा कब तक फाइनेलाइज कर लेंगे ?

श्री ब० रा० भगत : अखबारों में जो माननीय सदस्य पढ़ा करें वह सभी सही नहीं होता है, उसकी छानबीन भी कर लिया करें । अभी जैसा मैंने कहा कि इंडियन गुड्स का निर्यात जो रूस और रूमानिया में हुआ है वह कम नहीं है, खास कर 1968 में बढ़ा है । 139 करोड़ का ऐक्सपोर्ट 1968 में हुआ जो पिछले सभी सालों से अधिक था । जहां तक रेलवे वेंगन्स की बात है, यह रूस के सम्बन्ध में कह रहा हूँ, वह अभी जैसा मैंने कहा था, अभी उनसे बातचीत चल रही है और कोई फैसला हो जायगा तो उस को हम सदन के सामने रखेंगे ।

श्री सुरज भान : हमारी जो ऐक्सपोर्ट की ग्राइटम्स हैं वह पुरानी हैं, मसलन पटसन, चाय । तो मैं जानना चाहता हूँ कि कुछ नये ग्राइटम्स का भी आप ऐक्सपोर्ट कर रहे हैं ? इसके लिए कोई स्कीम है ? अगर है तो वह क्या है ?

श्री ब० रा० भगत : पुरानी ग्राइटम्स भी हैं और नये ग्राइटम्स भी बढ़ रहे हैं तेजी से । जैसे इंजीनियरिंग गुड्स में 1967 में उन का निर्यात जो 3.2 करोड़ था वह 1968 में बढ़ कर 11.9 करोड़ हो गया है ।

SHRI SWELL : There are rumours that the Russians have put the prices of these wagons very low so that for all practical purposes the wagon deal with the Russians has fallen through, I would like to know from the Minister what is the current negotiating price of these wagons and whether Government consider these prices to be economical ?

SHRI B. R. BHAGAT : The negotiation is at a very delicate stage and it